कहानी

पूर्वाग्रह

प्रगति त्रिपाठी

सुबह की चाय पीते हुए मीता और मनोज आपस में बातें कर रहे थे तभी मनोज ने कहा अरे मीता तुम्हारी दोस्त रमा का क्या हाल है? कल कोर्ट में उनके गांव से एक क्लाइंट आया था. ठीक ही होगा. मीता ने बेमन से जवाब दिया.क्या बात है, ऐसे क्यों बोल रही हो? मनोज ने मीता की बेरूखी को देखते हुए पूछा.

कुछ नहीं, आपको कोर्ट जाने में देरी नहीं हो रही है. जाइए जाकर नहा लीजिए. मैं नाश्ता बनाने जा रही हूं. नाश्ता बनाते हुए मीता को ध्यान आया कि रमा से बात किए हुए उसे तो एक महीने से ज्यादा समय हो गया है. मीता एक महीने पहले की यादों में खो गई. जब रमा उसके घर आई थी और बातों ही बातों में रमा ने अपनी बेटी लता को मीता की बहू बनाने की बात छेड़ते हुए कहा था देख मीता मैं और तू कितने अच्छे दोस्त है क्यों ना इस दोस्ती को और पक्का करने के लिए हम अपने बच्चों का रिश्ता जोड़ लें! क्या कहती है? अचानक ऐसे प्रश्न के पूछे जाने पर मीता एकदम से सकपका गई. लता देखने में सुंदर थी और पढ़ी लिखी भी थी लेकिन समस्या ये थी कि मीता का बेटा डॉक्टर था और घर में सभी चाहते थे कि डॉक्टर बहू आए. रवि को भी सेम प्रोफेशन की लड़की ही चाहिए थी. जब ये बात मीता ने रमा को बताई तो रमा का चेहरा उतर गया.

इस पर रमा ने कहा हां ये भी ठीक है सबकी अपनी पसंद है किसी पर दबाव नहीं बना सकते. कुछ घंटे ठहरने के बाद रमा परिवार सहित वापस चली गई. रमा और मीता दोनों बचपन की सहेलियां थी. उनकी शादी भी आस - पास के गांव में ही हुई थी. बाद में दोनों सहेलियां गांव के नजदीक वाले शहर में शिफ्ट हो गई. मनोज वहां वकालत करने लगे और रमा के पति रेलवे में कर्मचारी थे इसलिए वे रेलवे क्वार्टर में शिफ्ट हो गए, जो की मेन सिटी से बाहर पड़ता था. इसलिए दोनों कभी - कभी वीकेंड में एक दूसरे से मिलने चली जाया करती थी. एक दिन मनोज कोर्ट से वापस आ रहे थे, शाम का वक्त था, अचानक दूर से बहुत स्पीड में एक बाईक सवार ने उनको धक्का मार दिया. बाईक सवार नशे में था उसे भी चोट आई. आनन - फानन में आसपास के दुकानदारों ने उन्हें अस्पताल पहुंचाया. एक्सीडेंट के कारण उनके एक पैर में फ्रैक्चर आ गया. इस कारण उन्हें एक सवा महीने के लिए बेड रेस्ट करना पड़ा. एक्सीडेंट की खबर आग की तरह मनोज के दोस्तों, शुभचिंतकों और सहकर्मियों के बीच फैल गई और सब बारी- बारी उसका हाल - चाल लेने आने लगे. मीता पूरी तरह से मनोज की सेवा में जुट गई और मनोज से मिलने आने वाले मेहमानों की आवभगत में लगी रही. एक - सवा महीने बाद मनोज के पैर का प्लास्टर हट गया, धीरे-धीरे वो चलने - फिरने लगे और न्यायालय भी जाने लगे. एक दिन मनोज के दोस्त अमित उनसे मिलने आए और बातों-बातों में अपने लड़के के विवाह की बात करने लगे. उन्हें लड़की पढ़ी - लिखी और इंजीनियर चाहिए थी. उनकी बात सुनते ही मनोज को रमा की बेटी लता का ख्याल आया. लड़का भी इंजीनियर था. सेम प्रोफेशन में होने के कारण जोड़ी अच्छी जम रही थी. मनोज ने मीता से जब इस बाबत बात की तो मीता ने कहा कि रिश्ता तो सही रहेगा लेकिन देखिए इतनी परेशानी में रमा ने एक बार भी हमारी खबर नहीं ली. मीता, हो सकता है रमा को इस बारे में जानकारी नहीं हो. मनोज ने कहा. हां....सारी दुनिया को इस बात की खबर लग गई बस रमा को ही खबर नहीं. तुम भी क्या - क्या सोच लेती हो? ऐसी बात नहीं होगी...वो इतनी तो समझदार है कि हमारी बातों को ग़लत तरीके से नहीं लेगी. वह बखूबी जानती है कि आजकल शादी- ब्याह लड़का -लड़की के पसंद से होती है ना कि मां - बाप की मर्जी से. मनोज ने कहा.

अरे आप कुछ नहीं समझते, रमा को अपने धन - संपत्ति पर बहुत नाज है. उसे लगता है कि खूब सारा दहेज दे देने से आईपीएस, डॉक्टर मिल जाएंगे. तुमसे ये किसने कहा कि रमा ऐसा सोचती है? कुछ भी बोलती हो.कौन कहेगा? वो ही कह रही थी कि पैसों से क्या नहीं मिल जाएगा? वो ठसक में बैठी है तो बैठी रहें, मुझे क्या?

अहम तो तुम्हारी बातों से ज्यादा झलक रहा है. अरे तुम दोनों बचपन की सहेलियां हो. एक बार अगर तुम ही फोन कर लोगी तो कोई छोटी नहीं हो जाओगी! मैं क्यों फोन करूं... मीता का व्यवहार देखकर मनोज दु:खी होकर कहने लगे तुमने फलदार वृक्ष देखा है? फल लगने से वो घमंड से ऊंचा नहीं होता बल्कि विनम्रता से झुक जाता है ताकि सभी उसके फल का आनंद ले सके. तुम भी विनम्र बनो, एक बार तुम ही फोन लगा लो. दो - चार दिन गुजरने के बाद रमा का फोन आया. उधर से आवाज आई हैलो! मीता कैसी हो दोस्त? मैं तो ठीक हूं. तुम अपना हाल बताओ? मीता ने मुरझाई आवाज में कहा. क्या हुआ मीता? सब ठीक है ना? मीता की मुरझाई आवाज सुनकर रमा ने चिंता जताते हुए पूछा.

अब क्या बताऊं तुम्हारे जीजाजी का एक्सीडेंट हो गया था. इनका हाल- चाल जानने के लिए लोगों का तांता लगा रहा, घर के लोग, रिश्तेदार, इनके सहकर्मी, उफ़ अकेले सब संभालते हुए हालत खराब हो गई है. बस एक तुम्हीं मिलने नहीं आई. अरे..रे, मुझे तो सचमुच इस बात का पता नहीं चला. कैसे हुआ ये सब? अब उनकी तबीयत कैसी है? अफसोस जताते हुए रमा ने कहा. संक्षेप में सारी घटना बताते हुए मीता ने टोंट मारते हुए कहा तुमने एक बार भी फोन नहीं किया. हां.. मीता बात तो तुम्हारी सही है, ग़लती मेरी ही है. लेकिन तुम भी तो मुझे ये बात बता सकती थी. हम दोनों हर सुख-दुख आपस में बांटते हैं और इतनी बड़ी बात तुमने मुझे बताना सही नहीं समझा? रमा ने दु:खी होते हुए कहा. मुझे तो लोगों की आवभगत करने से फुर्सत मिलती, तब तो तुम्हें बताती. खैर तुम इतने दिन कहां व्यस्त थी जो एक बार भी हालचाल नहीं लिया? मीता ने प्रतिवाद में कहा.

क्या बताऊं मीता, मैं भी कम परेशानी में नहीं थी, तुम्हें तो पता है ना कि गांव के जमीन को लेकर लंबे समय से हमारा, हमारे पट्टीदारों से विवाद चल रहा था. इसी बीच मां की तबीयत भी बहुत खराब हो गई थी. भाई से बुलावा भेजा तो मैं लता को लेकर मायके चली गई. हमारे जाने के पांच दिन बाद ही मेरे घर में चोरी हो गई. चोर घर के सारे कीमती सामान और जेवर लुटकर ले गए साथ ही उन लोगों ने तुम्हारे जीजाजी और मुकुल को बहुत मारा. एक महीने तक दोनों अस्पताल में भर्ती रहे. पुलिस में रिपोर्ट दर्ज करवाने के बाद एक चोर पकड़ा गया और पता चला कि ये चोरी हमारे पट्टीदारों ने ही करवाई थी. रमा की बात सुनकर मीता को बहुत आत्मग्लानि हुई. मीता ने रमा से सहानुभूति जताई और कहा मुझे माफ करना रमा, मैं तो कुछ और ही सोच बैठी थी..मुझे लगा की मैंने बच्चों की शादी से इंकार किया था इसलिए मुझे लगा कि तुम नाराज हो गई. कैसी बात करती हो मीता? मैं बच्ची थोड़ी हूं कि इस बात से नाराज हो जाऊंगी. मैं भी दुनिया देख रही हूं और आजकल के बच्चे अगर अपनी पसंद से शादी करना चाह रहे हैं तो इसमें कोई बुराई नहीं.

ओह! आज मेरे दिल का बोझ हल्का हो गया... मैं तुमसे जल्दी मिलूंगी. मनोज वहीं बैठे मीता और रमा की बातें सुन रहे थे. मीता उनसे नजरें नहीं मिला पा रही थी. पाश्चाताप के भाव उसके चेहरे पर साफ दिखाई दे रहा था. मैं हमेशा कहता हूं कि किसी के बारे में गलत नहीं सोचना चाहिए. हो सकता है उसकी परिस्थिति अनुकूल ना हो लेकिन तुम हमेशा दूसरों में ही गलतियां ढूढ़ती रहती हो. मैं अपने किए पर सच में बहुत शर्मिन्दा हूं, ये सब कहकर मुझे और शर्मिंदा मत करो. आगे से मैं किसी के बारे में बिना सोचे-समझे अपनी राय नहीं बनाऊंगी.

नजरिया

एक पल का जीवन

नम्रता कचोलिया
लेखिका / प्रेरक वक्ता

आखिर कौन भला ये सोच कर उस दिन अहमदाबाद से फ्लाइट में बैठा होगा की ये हमको आसमान तक तो ले जाएगी पर ज़मीन पर वापस सलामत नहीं ला पायेगी.

इस एक घटना ने हम सबको हताश किया है ,जब जब वो तस्वीरे देखते है मन व्यथित हो उठता है की आख़िर क्यों ऐसा हुआ? काश किसी तरह से उस प्लेन की सेफ लैंडिंग हो पाती.

अंततः इस घटना से बहुत सारे लोगो ने जीवन को एक अलग नज़रिए से समझने की कोशिश शुरू कर दी जो की बहुत हद तक सही भी है.

जरा आप खुद सोचिए जिस जीवन की कोई ग्यारंटी नहीं है, जहाँ हमे ये तक नहीं पता की हम कब तक जीने वाले है उस जीवन से हम हर रोज़ किसी ना किसी तरीके से खुद खिलवाड़ करते है.

कोई सेहत का ध्यान नहीं रखता ,तो कोई जीवन को बहुत ही हल्के में लेकर जी रहा है, कोई हर रोज़ काम टाल रहा है तो किसी को लगता है अभी तो हमारी उम्र ही क्या है अभी हम अपने हिसाब से जियेंगे.

यदि आप ध्यान दे तो इस तरह से होने वाली घटनाये हमको दु:खी बहुत करती है, पर इनसे हम दिशा निर्देशन का काम भी करती है वो भी सिर्फ तब जब हम इसकी गहराई में जाकर इस पर विचार करे.

वास्तव में जीवन सिर्फ उस एक पल जितना ही होता है जिसे हम उसी एक पल में जी रहे होते है, अगले पल का ना हमको पता है ना कोई बता सकता है, तो फिर हम आने वाले अगले पल पर आखिर किसके भरोसे निर्भर हो जाते है?

हम सोचते ज़रूर है की ये करना है वो करना है पर उस सोच का 10% आज करने का सोचते है, बाकी तो 90% हमेशा कल पर छोड़ देते है.

माना हर काम आज इसी वक्त नहीं किया जा सकता पर ध्यान रहे आज शुरू तो किया जा सकता है ना, और फिर उसको अगले दिन से भी लगातार करने का प्रण तो आज बिल्कुल लिया जा सकता है ना. जीवन में हर चीज़ को टालना बंद कीजिए.

आज से ही हर कल पर डाले हुए काम को शुरू कीजिए, इसी पल से ही हर उस चीज़ पर ध्यान दीजिए जो आपने कल के अज्ञात पलो पर छोड़ रखी थी.

एक बार मिले इस जीवन को ऐसे जिया जाये की जब जाने का समय आए तो मन में कोई काम अधूरा ना नज़र आये.

कविता

सुचिता सकुनिया

खामोशी की जुगलबंदी ?

एक गुफ्तगू हुई दिमाग और दिल के बीच।
दिल था बेचैन और दिमाग था उदास।
सिरहाने बैठे थे दोनों,
पर पसरी पड़ी थी खामोशी।

मन सवाल करने लगा—
क्यों प्यार के दो बोल से ज्यादा
पसंद हैं तुमको ये खामोशी के पल?

दिमाग ने भी रख दी अपनी बात—
जब तुमने बना लिया तन्हाई को हमदर्द,
तो मैंने भी ढूंढ लिया
खामोशी में सुकून के दो पल।

दिल ने दिमाग से पूछा—
क्या नहीं कर सकते तुम
इस उलझन को दूर?

दिमाग ने दिल से कहा—
अरे, जब हो तुम परेशान
तो बैठ जाना मेरे बगल में।
अल्फाजों का शौकीन जरूर हूं,
पर खामोशी से परेशान नहीं होता।

यात्रा वृतांत

एक शहर, जिसकी खूबसूरती दिल में बस जाए

महिमा वर्मा

.... इस बार मेरे बोस्टन, अमेरिका पहुंचने के पहले ही हम सब साथ में समय बीता सकें, ये योजना बना चुके थे तो हम दल-बल निकल पड़े पोर्टलैंड के लिए जो अमेरिका के मेन राज्य में है, ये प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर न्यू इंग्लैंड क्षेत्र में आता है. पोर्टलैंड बड़ी ही खूबसूरत कोस्टल सिटी है.

सुबह कार से बोस्टन से निकले ठंड, बादल, बरसात, धुंधलका देखकर उत्साह थोड़ा ठंडा पड़ने लगा पर पोर्टलैंड में प्रवेश किसी जादू नगरी में आने से कम नहीं रहा. एकदम से नजरों के सामने वादियाँ, खाड़ी का विशाल नीला पाट उसमें अनेकानेक जहाज,चारों ओर बिखरी हरीतिमा से अपने आप को घिरा हुआ पाया. और थोड़ा आगे जाकर लाल ईंटों से बनी हुई विक्टोरियन आर्किटेक्चर की इमारतें. ये इमारतें 1866 में लगी भयानक आग के बाद की बनी हुई हैं.

पोर्टलैंड तो पहली नजर में ही दिल में बस गया . सड़क किनारे फर्शियों से बने हुए रास्ते इस शहर को एक ओल्ड वर्ल्ड चार्म देते हैं..यह शहर जहाँ एक तरफ इतिहास को समेटे बैठा है, यहां का पोर्ट पुरातन समय से ही सामुद्रिक व्यापार का केंद्र रहा है और आज भी है वहीं दूसरी ओर यह अमेरिका में अपने शानदार खान पान के कारण प्रसिद्धि में नंबर वन की पायदान पर खड़ा हुआ है, शायद ये खूबी ही हम इंदौरियों को यहाँ आने के लिए ललचा गई. आने से पहले बच्चे लोग गूगल बाबा की सहायता से जोरशोर से वहाँ की खाने पीने की जगहों की सर्च में मन प्राण से जुटे हुए थे और पहुंच कर पूरा न्याय भी किया गया.

.. यहाँ का वाटरफ्रंट आज भी कार्गो जहाजों की आवाजाही से गुलजार रहता है. साथ ही लगी हुई कमर्शियल स्ट्रीट पर बस आप चलते जाइए एक से बढ़कर एक आर्ट गैलरी, रेस्तरां, बेकरी, हस्त निर्मित वस्तुएं, जैम, मार्मलेड की दुकानें, चाहे देखिए चाहे खरीदिए.

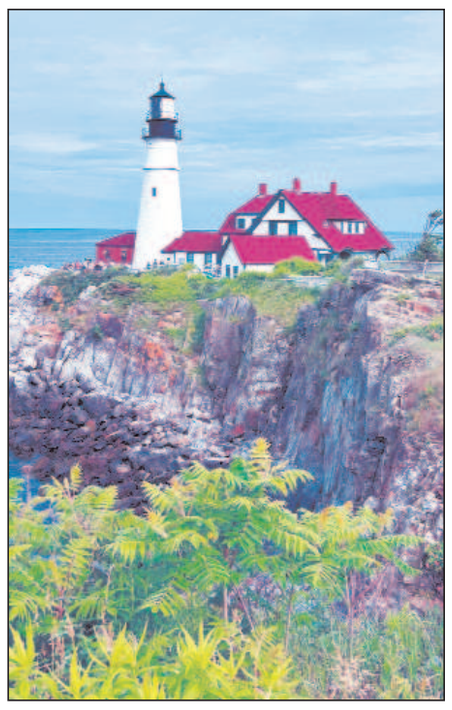

... पूरे अमेरिका में पोर्टलैंड अपनी तीन चीजों के लिए प्रसिद्ध है सी फूड में लोबस्टर या केकड़ा, क्राफ्ट बीयर एवं ब्लूबेरी.

मेन राज्य लोबस्टर उत्पादन में अमेरिका में प्रथम स्थान पर है लगभग 100 मिलियन पाउन्ड वार्षिक होता है, और पोर्टलैंड इसकी प्रोसेसिंग और वितरण का केंद्र है. पूरे देश में यहाँ के लोबस्टर रोल के स्वाद का डंका बजता है. पोर्टलैंड का नाम लेते ही लोगों की टिप्पणी होती है, ओ वाओ, लोबस्टर रोल! इसी तरह यहाँ की स्थानीय ब्रेवरी में बनी हुई न्यू इंग्लैंड स्टाइल क्राफ्ट बियर बहुत प्रसिद्ध हैं. मेन में अमेरिका की 99त्नब्लूबेरी होती हैं जो यहाँ की स्टेट बेरी है, क्या ही अद्भुत स्वाद है इन ब्लूबेरी का, इनसे बने हुए जैम, पाई, मार्मलेड दुकानों में उपलब्ध हैं, बेकरी भी बहुत हैं जहाँ लाइन लगती है बेकरी आइटम खरीदने के लिए.

अब मेरा तो क्राफ्ट बियर और लोबस्टर रोल में कोई रोल था ही नहीं तो अपन तो बेकरी की लाइन में लगे खूब खरीदा, वहाँ भी खाया बोस्टन के लिए बाँध कर भी लाए.

.. अब खा पी कर हम चले पोर्टलैंड के आइकॉनिक लाइट हाउस को देखने यह शहर से थोड़ी दूर केप एलिजाबेथ की पथरीली चट्टानों पर पूरी शानो शौकत से खड़ा हुआ है सन 1791 से न जाने कितने जहाजों को कॉस्को खाड़ी से गुज़रता हुआ देख चुका है. इसको देखकर ही मंत्र मुग्ध हो जाते हैं, न कुछ बोल पाते हैं और न ही नज़रें हटा पाते हैं. यहाँ पहुंचने का नयनाभिराम रास्ता भी आपको अवाक् कर देने वाले सौंदर्य के लिए तैयार नहीं कर पाता है. बस वहाँ खड़े होकर आप मन ही मन उस समय में पीछे चले जाते हैं जब आने वाले जहाज इस लाइट हाउस को पार कर सुदूर यात्रा पर निकल जाते होंगे. पोर्टलैंड देखने लायक जगह तो है ही पर उसकी सबसे खास बात शहर की खुशनुमा तरंगें हैं. मेरे ख्याल से नई नई जगहों से असली परिचय वहाँ के खाने, गली कूचे, वहाँ बहने वाली तरंगों से होता है बजाय वहाँ के टूरिस्ट स्पॉट मात्र से. जिस दिन हम लोग वहाँ थे ऐसा लग रहा था कि सारे शहरवासी बाहर निकले हुए हैं और अचरज की बात ज्यादातर सीनियर या सुपर सीनियर सिटिजन लग रहे थे, जो चीज़ आश्चर्य मिश्रित खुशी दे रही थी वह थी उनकी जिंदादिली. रेस्तरां में, बेकरी में, ब्रेवरी में हर जगह उनकी मौजूदगी थी हर पल का आनंद उठाते हुए. बहुत ही खुशमिजाज, दोस्ताना अंदाज से हमसे भी बातचीत कर ली. उनकी खुशमिजाजी ने शहर की खूबसूरती में और चार चाँद लगा दिए, इस तरह एक सुंदर शहर की सुंदर यादें हमारे साथ वापस आईं.

नवगीत

विभूति तिवारी

कितनी टूटी-फूटी

कितनी टूटी-फूटी किरचें
मन में ढोते हैं .
पीस स्वार्थ की चक्की में निज टिक्का पोते हैं ..

हम समेट ताबीरें स्वप्निल
कब से बैठे हैं .
महल गिराकर देव नियति के अब भी ऐंठे हैं ..

हम कोल्हू के बैल जगत के हाथों जोते हैं .
कितनी टूटी-फूटी.....

पंजीरी का भोग देव की
चौखट धरते हम .
धन्य हमारी लेखी जब-तब
कच्चा चरते हम ..

तीन बूँद चरणामृत के बस
हमको होते हैं .
कितनी टूटी-फूटी.....

एकसमान गढ़ी दुनिया हित सबके खातिर है.
तंत्र अलग अपने हित सारा बैठा शातिर है ..

हास और परिहास ऊपरी,
अंतस् रोते हैं .
कितनी टूटी-फूटी.....

हम दुनिया के हाट अकेले
छोड़ गए अपने .
धुन में जगत बदलने की सब टूट गए सपने ..

यादों की सरिता उतराते
ठहरे गोते हैं .
कितनी टूटी-फूटी.....

स्मृति शेष

रातों के घर बंधुआ बैठे, चांदी के कलदारी दिन...

राजनारायण बोहरे

एक सजग साहित्यकार की चौकस नज़र अपने समय और समाज पर हमेशा बनी रहती है. वरिष्ठ साहित्यकार केबीएल पाण्डेय ने हमारे दौर की विसंगतियों और विडम्बनाओं को कुछ इस अंदाज़ में कहा कि हम इनसे गुज़रते हुए अवाक् रह जाते हैं-रातों के घर बंधुआ बैठे,चांदी के कलदारी दिन... खूनी तारीखें बन कर के आते हैं त्यौहारी दिन. ये दो पंक्तियाँ ही उनके समूचे सृजन को समझने के लिए चावल के वे दाने हैं, जिन्हें देखकर हम हांड़ी के बाक़ी सबके पकने का अंदाज़ लगा सकते हैं.

नाम से कृष्ण लेकिन वर्ण से उवल और धवल केश से सज्जित डॉ. कृष्ण विहारी लाल पाण्डेय एकबारगी गहरे तक प्रभावित करते थे. उनका भाषा ज्ञान, उच्चारण और आलोचना दृष्टि ग़ज़ब की थी. वे हिन्दी साहित्य और भाषा विज्ञान को बहुत रोचक ढंग से पढ़ने को प्रेरित करते थे. केबीएल पाण्डेय सर केवल शब्द गुरु नहीं थे, वे चम्बल अंचल के सारे रचनाकारों के सृजन संपरीक्षक और सलाहकार थे. अंचल के सैकड़ों स्नातक हर गुरुपूर्णिमा पर उनका ही गुरु पूजन सबसे पहले किया करते थे. 90 वर्ष की उम्र में बीते हफ़्ते उनका जाना भीतर एक अजीब खालीपन छोड़ गया है.

उनसे पहली मुलाकात सन् 1985 में शिवपुरी में ए.के. हंगल के आतिथ्य में हुए मप्र हिंदी साहित्य सम्मेलन के नाट्य रचना शिविर में हुई थी, जहाँ वे वरिष्ठ लेखक होते हुए भी प्रशिक्षु की तरह सीखने आए थे. हालाँकि इसमें नाटक और मंच की तमाम बारीकियों पर डॉ पाण्डेय का भी व्याख्यान हुआ. सन् 1986 में लखनऊ में प्रगतिशील लेखक संघ के स्वर्ण जयंती समारोह में दोबारा पाण्डेय जी मिलना हुआ, तब मंच से इतर चर्चा में उन्होंने प्रेमचंद व खवाजा अहमद अब्बास का तुलनात्मक वक्तव्य दिया.

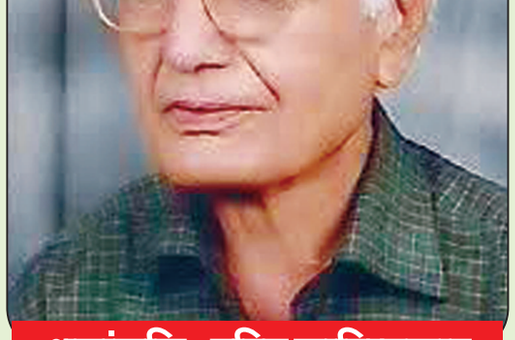

श्रद्धांजलि : वरिष्ठ साहित्यकार के बी एल पाण्डेय

दतिया में लगातार 31 वर्षों तक उन्होंने हर साहित्यिक-सांस्कृतिक आयोजनों में जबर्दस्त मंच संचालन किया. उनके संचालन को सुनकर लोग कहते थे- अगर अमीन सायनी संस्कृत पढ़ते, तो ऐसी ही आवाज़ होती. वे खुद कहानीकार नहीं थे, पर तमाम कथाकारों के गुरु रहे. मैत्रेयी पुष्पा, महेश कटारे, अशोक असफल जैसे ख्यात कथाकार भी उनसे मार्गदर्शन लेते थे. दतिया की साक्षरता परियोजना, समैया लोकसंस्कृति-उत्सव, गणतंत्र समारोह सहित सांस्कृतिक आयोजनों में उनकी उपस्थिति सृजन की रीढ़ थी. कविता उनकी आत्मा थी. 'पुष्प गंध', 'आँख भर अनंत', 'ऐसा क्यों होता है' और अंतिम संग्रह %लिख रहे वे नदी की अंतर कथाएँ % में उन्होंने आम जन का दर्द और समय का सत्य दर्ज किया. उन्होंने आम आदमी के दर्द को कुछ इस तरह लिखा- %है कथानक सभी का वही दुख भरा, जिंदगी सिर्फ शीर्षक बदलती रही.

वर्तमान युग की विसंगतियों पर वे लिखते हैं- अंधकार के साथ जिन्होंने संधि पत्र लिख दिये खुशी से, उन्हें सूर्य के संघर्षों का कोई क्या महत्त्व समझाये ! मैले संदर्भों पर जीवित ये ऐसी आधुनिक ऋचाएँ ! मोहक मुख्यपृष्ठों पर जैसे अपराधों की सत्य कथाएँ !! उनका संपादित शोध ग्रंथ दतिया-उद्भव और विकास अब दतिया शहर और बुन्देलखण्ड के सत्रहवीं सदी से लेकर आठवें दशक की सांस्कृतिक थाती है. बुंदेलखंड के महाकाव्यों के विश्लेषण से लेकर ईसुरी के गझिन श्रृंगार के रहस्य और मैत्रेयी पुष्पा व वल्लभ सिद्धार्थ के कथा साहित्य में व्याप्त लोक तत्त्व और दर्शन तत्त्व की जैसी विमर्श मूलक मीमांसा के बी एल पाण्डेय करते हैं वह अन्यत्र दुर्लभ है. इक्कीसवीं सदी की स्त्री कविता, हिंदी काव्य पर पाश्चात्य प्रभाव और आधुनिक कथा साहित्य पर जनवाद का असर उनके अतिप्रिय विमर्श थे. वीडियो कथा गोष्ठी हो या मंचीय कथा पाठ, वे इतना क्लियर नज़रिया रखते थे कि तुरन्त रचना की समीक्षा और पड़ताल दो टूक शब्दों में कर देते थे.

हरदौल पर 90 साल पहले लिखे गए खण्ड काव्य का उन्होंने सम्पादन व प्रकाशन किया. उर्दू में मिडिल,संस्कृत में मध्यमा की परीक्षा पास कर चुके कृष्ण विहारी लाल पाण्डेय ने अंग्रेजी व हिन्दी में एम.ए. किया. स्कूल शिक्षा में इंग्लिश व्याख्याता और हिन्दी साहित्य में सहायक प्राध्यापक नियुक्त हुए । हजारी प्रसाद द्विवेदी और रामधारी सिंह दिनकर की दृष्टि से भारतीय संस्कृति के तत्त्वों का अनुशीलन करने पर डॉ पाण्डेय का मानना था कि युगों युगों से समृद्ध रूप से प्रचलित भारतीय संस्कृति के जनवादी सूत्र वैदिक साहित्य और आरण्यक ग्रन्थों में मिलते हैं.

मेरी आखिरी बार उनसे गुरुपूर्णिमा पर भेंट हुई थी, नहीं मालूम था वह अंतिम होगी. उनके न रहने पर बार-बार उनकी ही कही पंक्तियाँ बरबस याद आती हैं-डाल पर अब पक न पाते फल, हमारे पास कितना कम समय है! कौन मौसम के भरोसे बैठता अब,चाहतों के लिए पूरी उम्र कम है! मण्डियाँ सम्भावनाएँ तौलती हैं, स्वाद के बाजार का अपना नियम है! मिट्टुओं का वंश है भूखा यहाँ तक आगया दुर्भिक्ष भय है!

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी